जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

छह खण्ड भरत के सामने नहीं, भरत चक्रवर्ती के सामने झुके थे और बाहुबली से भरत चक्रवर्ती नहीं, सिर्फ भरत लड रहे थे।
ह्न गोमटेश्वर बाहुबली, पृष्ठ:१३

वर्ष : 28, अंक : 17 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (प्रथम) 2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

भव्य गजरथ महोत्सव पूर्वक पंचकल्याणक मनाया गया

किशनगढ़ (राज.) : यहाँ हमीर कॉलोनी मदनगंज में नवनिर्मित भगवान महावीरस्वामी एवं भगवान नेमिनाथ समवशरण जिनमंदिर हेतु श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक १६ से २१ नवम्बर, २००५ तक श्री नेमिनाथ दिग. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन भव्य गजरथ महोत्सव सहित अनेक मांगलिक कार्यक्रमों पूर्वक आर. के. वाटिका, किशनगढ़ में सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में देश-विदेश के ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पर प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रजी जैन आगरा, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित सुरेशचन्दजी सागर आदि के प्रवचनों का लाभ मिला।

पंचकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद द्वारा सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र.धन्यकुमारजी बेलोकर, पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित संदीपजी शास्त्री छतरपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, स्वामीजी सोनागिर, पण्डित बाबूलालजी बांझल गुना, पण्डित मनीषजी सिद्धान्त खडैरी, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री अभाना, पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित चेतनजी शास्त्री खडैरी, पण्डित मनोजजी शास्त्री कोटा आदि के सहयोग से सम्पन्न हुई।

जिनमंदिर में मूलनायक भ.महावीरस्वामी, विधिनायक भ. नेमिनाथस्वामी तथा भ.पार्श्वनाथ के अतिरिक्त भगवान नेमिनाथ समवशरण में जिन प्रतिमायें विराजमान की गईं। जिनमंदिर में एक देव-शास्त्र-गुरु वेदी का निर्माण भी किया गया, जिसमें भगवान नेमिनाथ, चार अनुयोगमयी जिनवाणी एवं पूर्वाचार्यों के चरणकमल स्थापित किये गये। मुख्य वेदी पर मार्बल के ६४ चंवर स्थापित किये गये।

महोत्सव में नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती रतनदेवी-मोतीचन्दजी लुहाड़िया जोधपुर को प्राप्त हुआ। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री प्रदीपकुमार-कुसुम चौधरी किशनगढ़ तथा कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री संजीवकुमार-संस्कृति गोधा जयपुर थे। सम्पूर्ण महोत्सव यज्ञनायक श्री भागचन्दजी चौधरी किशनगढ़ के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

राजुल के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती भंवरदेवी-राजमलजी लवाण को मिला।

दिनांक १६ नवम्बर को प्रतिष्ठा महोत्सव का ध्वजारोहण श्री पूनमचन्दजी-नरेशजी लुहाड़िया परिवार मुम्बई द्वारा किया गया। शौरिपुर के सिंह द्वार का उद्घाटन श्री प्रेमचन्दजी महावीर टेन्ट हाऊस, श्री कपूरचन्दजी गदिया व श्री अजितजी पाटनी अजमेर, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री कन्हैयालालजी दलावत उदयपुर तथा प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री पदमचन्द जम्बूकुमारजी भौंच परिवार अलवर द्वारा किया गया।

इस अवसर पर याग मण्डल विधान का आयोजन श्री चांदमलजी ललितकुमारजी जैन परिवार लूणदा द्वारा किया गया।

गर्भ कल्याणक के अवसर पर कुमारी वीणा अजमेरा, भीलवाड़ा का ६३ कलश नृत्य, जन्मकल्याणक पर मैनपुरी का ५० फीट का रत्नजड़ित पालना, तपकल्याणक पर सांस्कृतिक मण्डल मण्डलेश्वर द्वारा 'नेमि-राजुल का वैराग्य', केवलज्ञान कल्याणक पर अ.भा.जैन युवा फैडरेशन भीलवाड़ा द्वारा प्रस्तुत 'संसार दर्शन' नाटक विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे तथा मोक्षकल्याणक के दिन ललितपुर से आया तीन मंजिला गजरथ किशनगढ़ नगर की परिक्रमा करके नवनिर्मित जिनमंदिर पहुँचा।

दिनांक २१ नवम्बर को पर्यावरण एवं खनन मंत्री श्री लक्ष्मी नारायण दबे का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

भगवान महावीर जिनमंदिर का उद्घाटन श्री पूनमचन्दजी लुहाड़िया अजमेर, समवशरण जिनमंदिर का उद्घाटन श्री विमलजी जैन नीरू कैमीकल्स दिल्ली, स्वाध्याय भवन का उद्घाटन श्री नेमिचन्दजी पहाड़िया पीसांगन तथा वीतराग-विज्ञान पाठशाला का उद्घाटन श्री भागचन्दजी कालिका उदयपुर के करकमलों से हुआ। ध्वजारोहण श्री सुबोध-सुधा जैन शिलोंग ने किया।

महावीर स्वामी जिनमंदिर पर स्वर्ण कलश व ध्वजारोहण श्री अनंतभाई सेठ मुम्बई के प्रतिनिधि श्री बसन्तभाई दोशी के करकमलों से हुआ तथा समवशरण जिनमंदिर पर कलश एवं ध्वजारोहण श्री निहालचन्दजी जैन ओसवाल, जयपुर द्वारा हुआ।

महोत्सव को आकर्षक बनाने हेतु सीमंधर

(शेष पृष्ठ ३ पर ...)

सम्पादकीय –

नींव का पत्थर

15

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आयोजन का प्रयोजन पहचानें

समताश्री ने आज के निर्धारित विषय पर अपना चिन्तन प्रस्तुत किया – ''षट्कारक कारण-कार्य प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। मोक्षमार्ग की उपलब्धि में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। वस्तुस्वातंत्र्य जैसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त को समझने के लिए षट्कारकों का समझना अति आवश्यक है।

यह विषय वस्तुस्वातंत्र्य, कारण कार्य स्वरूप, कर्ता-कर्म और अनेकांत जैसे प्राणभूत सिद्धान्तों जैसा ही महत्वपूर्ण प्रकरण है।

वस्तु की स्वतंत्रता का उद्घोषक और वीतरागता का हेतुभूत यह षट्कारक प्रकरण मोक्षमार्ग में ऐसा उपयोगी विषय है, जिसके जाने बिना वस्तु की कारण-कार्य व्यवस्था का ज्ञान अधूरा है; इससे आत्मोपलब्धि में हेतुभूत स्वावलम्बन का मार्ग सुलभ होता है।

षट्कारकों का विशद विवेचन प्रवचनसार गाथा १६, पंचास्तिकाय गाथा ६२ तथा ६४ एवं ४७ शक्तियों में कारक शक्तियों में विशेष किया है।''

इसप्रकार जीवराज के उद्बोधन को सुनकर सभी को भारी संतोष हुआ। इसी विषय पर अध्यापक श्री जिनसेनजी ने मंगलाचरण करते हुए संगोष्ठी के रूप में प्रश्नोत्तर शैली में यही षट्कारक का विषय प्रस्तुत किया।

स्वात्मोपलब्धि प्राप्त स्वाश्रित, स्वयं से सर्वज्ञता।
स्वयंभू बन जाता स्वतः अरु स्वयं से समदर्शिता।।
स्वतः होय भवितव्य, षट्कारक निज शक्ति से।
उलट रहा मन्तव्य, मिथ्यामति के योग से।।

इस मंगलाचरण में कहा गया है कि स्वानुभूति, सर्वज्ञता, वीतरागता आदि निज कार्य के षट्कारक निज शक्ति से निज में ही विद्यमान हैं; किन्तु मिथ्या मान्यता के कारण अज्ञानी अपने कार्य के षट्कारक पर में खोजता है। यही मिथ्या मान्यता राग-द्वेष की जनक है। अतः कारकों का परमार्थ स्वरूप एवं उनका कार्य-कारण सम्बन्ध समझना अति आवश्यक है। **अविनाभाव** वश जो बाह्य वस्तुओं में कारकपने का व्यवहार होता है, वे व्यवहार कारक हैं।

जिनसेन का संकेत पाकर एक शिष्य ने प्रश्न किया ह्न ''गुरुदेव ! कारक कहते किसे हैं ?''

जिनसेन ने उत्तर दिया ह्न ''जिसका क्रिया से सीधा सम्बन्ध हो, जो क्रिया के प्रति किसी न किसी रूप में प्रयोजक हो, जो क्रिया निष्पत्ति में कार्यकारी हो, क्रिया का जनक हो; उसे कारक कहते हैं।''

तात्पर्य यह है कि जो किसी न किसी रूप में क्रिया व्यापार के प्रति प्रयोजक हो, कार्यकारी हो, वही कारक हो सकता है अन्य नहीं; कारक छह होते हैं। कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण।

एक श्रोता ने पूछा ह्न ''गुरुदेव ! इन छहों सामान्य कारकों का स्वरूप क्या है और ये कार्य के निष्पन्न होने में किसप्रकार कार्यकारी हैं ?''

जिनसेन ने कहा ह्न सर्वप्रथम षट्कारकों का सामान्य स्वरूप बताते हैं ह्न

१. कर्त्ताकारक :– जो स्वतंत्रता से स्वयं कार्यरूप परिणमित होता है तथा जो क्रिया व्यापार में स्वतंत्ररूप से कार्य का प्रयोजक हो, वह कर्त्ता कारक है। प्रत्येक द्रव्य अपने में स्वतंत्र व्यापक होने से अपने ही परिणाम का निश्चय से कर्त्ता है।

2. कर्म कारक :– कर्त्ता जिस परिणाम (पर्याय) को प्राप्त करता है, वह परिणाम उसका कर्म है।

3. करण कारक :– क्रिया की सिद्धि में जो साधकतम होता है, वह करण कारक है।

4. सम्प्रदान :– कर्म परिणाम जिसे दिया जाय वह सम्प्रदान है।

5. अपादान :– जिसमें से कर्म हो, वह ध्रुव वस्तु अपादान है।

6. अधिकरण :– क्रिया की आधारभूत वस्तु अधिकरण कारक है। अथवा जिसके आधार से कार्य हो , वह अधिकरण है।

पंचास्तिकाय गाथा ६२ में कहा है कि ह्न 'सर्व द्रव्यों की प्रत्येक पर्याय में ये छहों कारक एकसाथ वर्तते हैं, इसलिए आत्मा और पुद्गल शुद्धदशा में या अशुद्ध दशा में स्वयं छहों कारकरूप निर्पेक्ष परिणमन करते हैं, दूसरे कारकों की अर्थात् निमित्त कारणों की अपेक्षा नहीं रखते।'

प्रवचनसार गाथा १६ में भी कहा है ह्न 'निश्चय से पर के साथ आत्मा का कारकता का सम्बन्ध नहीं है, जिससे शुद्धात्मस्वभाव की प्राप्ति के लिए पर सामग्री को खोजने की आकुलता से परतंत्र हुआ जाय। अपने कार्य के लिए पर की रंचमात्र भी आवश्यकता नहीं है। अतः पराधीनता से बस हो।'

दूसरे शिष्य ने पूछा ह्न गुरुदेव ! पंचास्तिकाय और प्रवचनसार के उपर्युक्त कथनों में आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने क्या अन्तर स्पष्ट किया है?

जिनसेन ने उत्तर में कहा ह्न ''भाई ! तुमने बहुत उत्तम प्रश्न किया है ह्न सुनो ! यहाँ प्रवचनसार में प्रकरणवश आचार्यदेव ने केवलज्ञान रूप निर्मल पर्याय की प्राप्ति को पूर्ण स्वतंत्र-स्वाधीन सिद्ध किया है और पंचास्तिकाय में कर्म और जीव की विकारी पर्यायों को भी पूर्णतया स्वतंत्र, परनिर्पेक्ष सिद्ध करके स्वतंत्रता की उद्घोषणा करते हुए परकर्तृत्व का पूर्णतया निषेध किया है।'

तीसरे शिष्य ने पूछा ह्न ''ये विकारी पर्यायें अहेतुक है या सहेतुक?''

जिनसेन ने कहा ह्न ''भाई ! निश्चय से विकारी पर्यायें भी अहेतुक ही हैं; क्योंकि - प्रत्येक द्रव्य अपना परिणमन स्वतंत्र रूप से करता है। परन्तु विकारी पर्याय के समय निमित्त रूप हेतु का आश्रय अवश्य होता है, इसकारण व्यवहार से उसे सहेतुक भी कहा जाता है।

ध्यान दें, कर्मों की विविध प्रकृति-प्रदेश-स्थिति-अनुभाग रूप विचित्रता भी जीवकृत नहीं है, पुद्गल कृत ही है। जीव के परिणाम तो निमित्तरूप में मात्र उपस्थित होते हैं, वे कर्मों के कर्ता नहीं।''

पुनः प्रश्न ह्न क्या जीव कर्म के उदय के अनुसार विकारी नहीं होता?

जिनसेन का उत्तर ह्न ''नहीं, कभी नहीं; क्योंकि ऐसा स्वीकार करने पर तो सर्वदा विकार होता ही रहेगा; क्योंकि संसारी जीव के कर्मोदय तो सदा विद्यमान रहता ही है।

पुनः प्रश्न ह्न तो क्या पुद्गल कर्म भी जीव को विकारी नहीं करता ?

जिनसेन का उत्तर ह्न ''नहीं, कदापि नहीं; क्योंकि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य की परिणति का कर्त्ता नहीं है।''

जब स्व में ही निज शक्तिरूप षट्कारक हों, तभी वस्तु पूर्ण स्वतंत्र एवं स्वावलम्बी हो सकती है।

प्रत्येक वस्तु का जितना भी 'स्व' है, वह स्व के अस्तित्वमय है। उसमें पर के अस्तित्व का अभाव है। सजातीय या विजातीय कोई भी वस्तु अपने से भिन्न स्वरूप सत्ता रखनेवाली किसी भी अन्य वस्तु की सीमा को लांघ कर उसमें प्रवेश नहीं कर सकती; क्योंकि दोनों के बीच अत्यन्ताभाव की बज्र की दीवाल है, जिसे भेदना संभव नहीं है।''

शिष्य ने विनयपूर्वक प्रश्न किया :ह्न विकारी पर्यायों को भी स्वतंत्र मानने का क्या कारण है, जबकि उनमें कर्म का उदय निमित्त होने से पराधीन कहने का व्यवहार है?

उत्तर :ह्न ''परकृत मानने से पर के प्रति रागद्वेष की संभावना बढ़ जाती हैं और स्वकृत मानने से अपनी कमजोरी की ओर ध्यान जाता है।

प्रत्येक द्रव्य स्वयं कर्त्ता होकर अपना कार्य (कर्म) करता है और कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरणरूप छहों कारक रूप से भी द्रव्य स्वयं निज शक्ति से परिणमित होता है। न तो द्रव्य सर्वथा नित्य है और न ही सर्वथा क्षणिक है; अपितु वह अर्थ क्रिया करण शक्ति रूप है। वह अपने गुणमय स्वभाव के कारण एकरूप अवस्थित रहते हुए भी स्वयं उत्पाद-व्यय रूप है। और भेदरूप या पर्यायरूप स्वभाव के कारण सदा परिणमनशील भी है। यही वस्तु का वस्तुत्व है।

तात्पर्य यह है कि - वह द्रव्यदृष्टि से ध्रुव है और पर्यायदृष्टि से उत्पाद-व्यय रूप है।''

दूसरे शिष्य ने जिज्ञासा प्रगट की ह्न ''यदि यह बात है तो आगम में उत्पाद-व्यय रूप कार्य को पर सापेक्ष क्यों कहा ?''

जिनसेन ने समाधान किया ह्न ''पर्यायार्थिकनय से तो प्रत्येक उत्पाद-व्यय रूप कार्य अपने काल में स्वयं के षट्कारकों से ही होता है, अन्य कोई उसका कर्त्ता-कर्म आदि नहीं है, फिर भी आगम में उत्पाद-व्ययरूप कार्य का जो पर सापेक्ष कथन है, वह केवल व्यवहारनय (नैगमनय) की अपेक्षा से किया गया है।''

पुनः प्रश्न ह्न ''आत्मा की कौन-कौन-सी शक्तियाँ वस्तु के स्वतंत्र षट्कारकों की सिद्धि में साधक हैं ?''

उत्तर :ह्न ''भाई ! तुम्हारा यह प्रश्न भी प्रासंगिक है, वैसे तो सभी शक्तियाँ वस्तु की स्वतंत्रता की ही साधक हैं, उनमें कतिपय प्रमुख शक्तियाँ इसप्रकार हैं ह्न

१. भावशक्ति :- इस शक्ति के कारण प्रत्येक द्रव्य अन्वय (अभेद) रूप से सदा अवस्थित रहता है। यह शक्ति पर कारकों के अनुसार होनेवाली क्रिया से रहित भवनमात्र है, अतः इस शक्ति द्वारा द्रव्य को पर कारकों से निरपेक्ष कहा है, इससे द्रव्य की स्वतंत्रता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

२. क्रियाशक्ति :- इस शक्ति से प्रत्येक द्रव्य अपने स्वरूप सिद्ध कारकों के अनुसार उत्पाद-व्यय रूप अर्थ क्रिया करता है।

३. कर्मशक्ति :- इस शक्ति से प्राप्त होने वाले अपने सिद्ध स्वरूप को द्रव्य स्वयं प्राप्त होता है।

४. कर्त्ताशक्ति :- इस शक्ति से होने रूप स्वतः सिद्ध भाव का यह द्रव्य भावक होता है।

५. करण शक्ति :- इससे यह द्रव्य अपने प्राप्यमाण अर्थात् प्राप्त होने योग्य कर्म की सिद्धि में स्वतः साधकतम होता है।

६. सम्प्रदान शक्ति :- इस शक्ति से प्राप्त होनेवाले कर्म स्वयं के लिए समर्पित होते हैं।

७. अपादान शक्ति :- इससे उत्पाद-व्यय भाव के उपाय होने पर भी द्रव्य सदा अन्वय रूप से ध्रुव बना रहता है।

८. अधिकरण शक्ति :- इससे भव्यमान (होने योग्य) समस्त भावों का आधार स्वयं द्रव्य होता है।

९. सम्बन्ध शक्ति :ह्न स्वभावमात्र स्व-स्वामित्वमयी सम्बन्ध शक्ति अर्थात् यह शक्ति अपने से भिन्न अन्य किसी द्रव्य के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखती। इसप्रकार वस्तु के स्वतंत्र षट् कारकों की सिद्धि में उपर्युक्त शक्तियाँ साधक हैं। इन्हीं से प्रत्येक द्रव्य की सभी पर्यायें कारकान्तर निर्पेक्ष सिद्ध होती हैं।

इस प्रकार महावीर जयन्ती पर आयोजित, विविध कार्यक्रमों के अन्तर्गत सांस्कृतिक संगोष्ठी में अध्यापक और छात्रों द्वारा प्रश्नोत्तर एवं संवादशैली में वस्तु स्वातंत्र्य सिद्धान्त के पोषक षट्कारक विषय को प्रस्तुत किया गया, जिसे श्रोताओं ने ध्यान से सुना, समझा और करतलध्वनि से प्रसन्नता प्रगट करते हुए अनुमोदना की। सभी सक्रिय भाग लेने वाले श्रोताओं एवं वक्ताओं को सरल, सफल, रोचक प्रस्तुति के प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत किया गया। ●

गिरनार जन आंदोलन के कार्य स्थगित

श्री गिरनारजी तीर्थ राष्ट्रस्तरीय एक्शन कमेटी की एक आवश्यक बैठक २३ अक्टूबर को दिल्ली में हुई; जिसमें अनेक विषयों पर विचार-विमर्श के बाद गिरनार पर्वत की समस्या को लेकर सारे देश में चल रहे आगामी जन आंदोलनों को स्थगित करने का निर्णय लिया गया है। यह निर्णय दोनों पक्षों को उचित समाधान के पक्ष में प्रयास कर रहे स्थानीय जिला कलेक्टर के सुझावों से सहमत होकर लिया गया।

(पृष्ठ १ का शेष ...)

संगीत सरिता छिन्दवाड़ा द्वारा प्रासंगिक गीतों का रसास्वादन कराया गया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की सम्पूर्ण व्यवस्थायें श्री राजेन्द्रजी चौधरी के निर्देशन में श्री रमेशजी गंगवाल, श्री मुकेशजी पाटनी, श्री तिलक चौधरी एवं श्री अरिहंत चौधरी के सहयोगियों ने संभाली ।

ज्ञातव्य है कि जिनमंदिर निर्माण एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने में श्री प्रदीपकुमारजी भागचन्दजी चौधरी परिवार किशनगढ़ का विशेष योगदान है।

महोत्सव में सम्पूर्ण देश से लगभग ४-५ हजार मुमुक्षुओं ने पधारकर धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर ५७ हजार ७१० रुपये का सत्साहित्य एवं ९ हजार ९८८ घण्टों के सी.डी व ऑडियो कैसिट्स घर-घर पहुँचे। ●

अष्टाह्निका समाचार

१. गजपंथा सिद्धक्षेत्र (नासिक-महा.) : यहाँ दिनांक ८ से १३ नवम्बर २००५ तक अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर पंचमेरु-नन्दिश्वर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर के मोक्षमार्गप्रकाशक, विदुषी पुष्पाबेन खण्डवा के प्रात: एवं रात्रि में समयसार तथा श्री इन्द्रकुमारजी खण्डवा के मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल के निर्देशन में पण्डित दीपकजी डांगे व पण्डित सुरेशजी काले द्वारा कराये गये।

२. सागर (म.प्र.) : यहाँ नवनिर्मित श्री महावीर जिनालय में दिनांक ८ से १५ नवम्बर, २००५ तक श्री इन्द्रध्वज मण्डल विधान मनाया गया। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली तथा पण्डित सुदीपजी जैन बीना के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ एवं पण्डित नन्हेलालजी जैन सागर ने कराये।

३. सोलापुर (महा.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में सौ. सुवर्णा व सुभाष मोतीचन्द पटवा परिवार की ओर से पर्व के अवसर पर सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विक्रान्तजी शाह एवं पण्डित राजकुमारजी आलंदकर के प्रवचनों का लाभ मिला। विधानादि के कार्य पण्डित प्रशान्तजी मोहरे, पण्डित विजयजी कालेगोरे व पण्डित रवीन्द्रजी काले ने सम्पन्न कराये।

यहीं पर श्री चिंतामण पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन कासार मन्दिर में दि. १० से १३ नवम्बर, ०५ तक श्री बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी आलंदकर द्वारा विधान की जयमाला पर प्रवचन हुये तथा विधि-विधान के कार्य पण्डित प्रशान्तजी मोहरे एवं पण्डित रवीन्द्रजी काले द्वारा कराये गये। प्रतिदिन प्रात: विधान-पूजन के पश्चात् प्रवचन, सायंकाल बालकक्षा, जिनेन्द्रभक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। **ह्न विजय कालेगोरे**

४. मुम्बई : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज बृहन्मुम्बई के तत्त्वावधान अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर मुम्बई के विभिन्न उपनगरों में आध्यात्मिक प्रवचनों का आयोजन किया गया; जिसमें **श्री सीमन्धर जिनालय में** पण्डित कमलचन्दजी पिडावा, **मलाड (ईस्ट) में** पण्डित रतनचन्दजी कोटा, **दहीसर में** ब्र. कैलाशचन्दजी अचल ललीतपुर, **भायन्दर में** मानमलजी जैन कोटा, **मलाड (वेस्ट) में** विपीनजी जैन आगरा एवं **दादर में** सोनुजी शास्त्री मुम्बई के प्रवचनों का लाभ मिला।

५. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर जिनालय में पर्व के अवसर पर गणधरवलय ऋषिमण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: विधान के उपरान्त पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि (टडा) के प्रात: समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य पण्डित मधुकरजी जैन जलगांव के सान्निध्य में पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर एवं श्री हिराचन्दजी बोहरा ने सम्पन्न कराये। **ह्न विजय पाण्डया**

धर्मप्रभावना

१. जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 23 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2005 तक ब्र. यशपालजी जैन जयपुर के प्रात: योगसार प्राभृत एवं रात्रि में कर्म की दस अवस्थाओं के स्वरूप पर मार्मिक प्रवचन हुये।

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के दिन ब्र. यशपालजी एवं जबलपुर मुमुक्षु मण्डल के सभी सदस्य अतिशय क्षेत्र मढीयाजी गये; जहाँ सामूहिक दर्शन-पूजन के पश्चात् स्थानीय विद्वान पण्डित राजेन्द्रकुमारजी एवं ब्र. यशपालजी के प्रवचनों का लाभ श्रोताओं को प्राप्त हुआ।

दोपहर में दीपावली विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसमें स्थानीय विद्वान पण्डित नरेन्द्रजी, पण्डित मनोजजी, पण्डित श्रेणिकजी पण्डित प्रशांतजी आदि ने अपने विचार रखें।

२. सागर (म.प्र.) : यहाँ नवनिर्मित श्री महावीर जिनालय में दिनांक २३ अक्टूबर से ७ नवम्बर, २००५ तक ब्र. कल्पनाबेन जयपुर के प्रात: छहढाला, दोपहर में गोम्मटसार कर्मकाण्ड एवं रात्रि में जैनसिद्धान्तों पर हुये सारगर्भित प्रवचनों का लाभ श्रोताओं को मिला।

आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

१. मंगलायतन (अलीगढ़-उ.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं तीर्थराज मंगलायतन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक २५ अक्टूबर से १ नवम्बर, ०५ तक आयोजित शिक्षण-शिविर सम्पन्न हुआ।

शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनोपरान्त पण्डित विमलचन्दजी झांझरी के नियमसार पर एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये।

दोपहर में छात्र प्रवचन के बाद पण्डित वीरेन्द्रजी जैन आगरा, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन एवं पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया के समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला।

इसीसमय बालकों को तत्त्वज्ञान के संस्कार प्रदान करने हेतु पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित अजीतजी 'अचल' ग्वालियर एवं पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन उज्जैन द्वारा शिक्षण कक्षाओं का आयोजन किया गया।

रात्रि में ब्र. सुमतप्रकाशजी के बारह भावनाओं पर प्रवचनों के अतिरिक्त जिनागम के विविध विषयों पर सेमिनार एवं संगोष्ठियाँ आयोजित की गई।

इस अवसर पर नवलब्धि विधान का आयोजन किया गया; जिसके सम्पूर्ण कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर ने सम्पन्न कराये।

सभी कार्यक्रमों का संचालन श्री पवन जैन अलीगढ़, श्री नागेश जैन पिड़ावा एवं पण्डित अशोकजी लुहाडिया ने किया। **ह्न सुधीर जैन**

२. छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के मंगल प्रसंग पर श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में अहिंसा स्थली गोलगंज स्वाध्याय भवन में पाँच दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: पूजनोपरान्त डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला तथा पण्डित विवेकजी जैन द्वारा शिक्षण-कक्षायें ली गई। **ह्न दीपकराज जैन**

विदर्भ एवं मराठवाड़ा के ३५ स्थानोंपर एकसाथ धार्मिक शिविर सम्पन्न

महाराष्ट्र प्रान्त तत्त्वप्रचार-प्रसार समिति नागपुर एवं श्री कुन्दकुन्द प्रवचन-प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में विदर्भ एवं मराठवाडा के ३५ स्थानों पर दिनांक ५ से १३ नवम्बर, २००५ तक विशाल धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

शिविर में ५० विद्वानों के सान्निध्य में लगभग ७-८ हजार साधर्मियों ने तथा ३९२० शिविरार्थियों ने विभिन्न विषयों की परीक्षायें उत्तीर्ण करके प्रमाण-पत्र प्राप्त किये। शिविर के माध्यम से मलकापुर, देवलगांवराजा, रिसोड, ढासाला, चिखली, बुलढाणा, खामगांव, नांदुरा, विहिगांव, डोणगांव, सेलू, वरुड, देवलगांवसाकर्शा, वसमतनगर, सेनगांव, पानकनेरगांव, बोरी, शिरपुर, पुसद, जवला, गंगाखेड, मोताला, रिठद, साखरा, हर्षी, सिंदखेड, मालेगांव, मुंगला, फालेगांव, गोरेगांव, हराल, मुलावा, कलमनुरी, हदगांव में पण्डित गुलाबचन्दजी बोरालकर, पण्डित आलोकजी कारंजा, पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित फूलचन्दजी मुक्किरवार, विदुषी मंजुषाजी मुक्किरवार, पण्डित कीर्तिजयजी गोरे, पण्डित प्रदीपजी माद्रप, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित नेमिचन्दजी महाजन, पण्डित दिलीपजी महाजन, पण्डित वीरेन्द्रजी वीर फिरोजाबाद, पण्डित अशोकजी मांगुलकर, पण्डित महावीरजी बखेडी, पण्डित विजयजी आह्वाने, पण्डित विजयजी राऊत, पण्डित अशोकजी मिरकुटे, पण्डित किरणजी उखलकर, पण्डित संतोषजी दहातोंडे, पण्डित अनंतजी विश्वंभर, पण्डित संतोषजी साहू, पण्डित अनिलजी बेलोकर, पण्डित प्रशांतजी काले, पण्डित अमोलजी संघई, पण्डित भरतजी अलगोंडर, पण्डित सत्येन्द्रजी मिरकुटे, पण्डित कमलेशजी जैन, पण्डित प्रशांतजी उकलकर, पण्डित मिलिन्दजी केटकाले, पण्डित अभिजीतजी अलगोंडर, पण्डित शैलेन्द्रजी पण्डा, पण्डित सतीशजी बोरालकर, पण्डित प्रजयजी कान्हेड, पण्डित विनोदजी बेलोकर आदि विद्वानों का लाभ मिला।

दिनांक ५ नवम्बर को शिविर का उद्घाटन श्री सन्तोषजी पाटनी वाशिम के करकमलों हुआ तथा समापन समारोह दिनांक १३ नवम्बर को अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर(जैन) में आयोजित हुआ; जिसकी अध्यक्षता पण्डित धन्यकुमारजी भोरे कारंजा ने की। मुख्यअतिथि श्री माणकचन्दजी बज और श्री चन्द्रशेखरजी उखलकर थे। अतिथियों में श्री संतोषजी पाटनी, डॉ. सुरेश जैन, श्रीमती विमला जैन एवं श्रीमती शकुन जैन नागपुर उपस्थित थे। शिविर में पुरस्कार वितरण श्री सिंघई नरेशकुमार जैन नागपुर के करकमलों से हुआ।

सम्पूर्ण शिविर समिति प्रमुख **श्री विश्वलोचनजी जैनी** के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी बेलोकर, सुलतानपुर एवं पण्डित विजयजी बोरालकर, वाघजाली के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ। शिविर में नागपुर मुमुक्षु मण्डल एवं समिति के सदस्यों का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

नितिन जैन सम्मानित

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र नितिन कुमार जैन पुत्र श्री चन्द्रप्रकाशजी जैन सेमारी को कक्षा १२ वीं में वरियता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त करनेपर मुरैना (ग्वालियर-म.प्र.) में आयोजित यंग जैना अवार्ड में आईआईटी की प्रोफेसर श्रीमती वनमाला जैन एवं कैरियर निर्देशक श्री वी.एन.राव द्वारा मैडल व प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया; एतदर्थ बधाई ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन महावीर परमागम ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक २८ सितम्बर से १२ अक्टूबर, २००५ तक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया; शिविर में मुख्य प्रवचन ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रात: समयसार एवं रात्री में पद्मनन्दी पंचविंशतिका पर हुये।

मुख्य प्रवचन से पूर्व डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित नितुलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा आदि विद्वानों के प्रवचन हुये।

शिविर में पण्डित कोमलचन्दजी द्वारा शिक्षण पद्धति की कक्षा, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा द्वारा बालबोध प्रशिक्षण व अभ्यास कक्षा तथा पण्डित अभयकुमारजी बदरवास, पण्डित नितुलजी शास्त्री एवं ब्र. आरती बेन छिन्दवाड़ा द्वारा अभ्यास कक्षा ली गई।

दिनांक १० अक्टूबर को आयोजित परीक्षा में बालबोध प्रशिक्षण में ७३ एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में १२ विद्यार्थी सम्मिलित हुये।

अन्त में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को जयपुर से प्राप्त प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार वितरित किये गये। शिविर का उद्घाटन श्री नीरजकुमार कैलाशचन्द जैन ने किया। सम्पूर्ण शिविर पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

श्रीमती ममता जैन को पीएच. डी. की उपाधि

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी सम्पूर्ण देश-विदेश के समग्र जैन समाज में एक चिर-परिचित नाम हैं; जिन्होंने ४५ वर्षों तक भगवान महावीरस्वामी द्वारा प्रतिपादित एवं कुन्दकुन्दादि आचार्यों द्वारा लिखित शाश्वत सिद्धान्तों का उद्घाटन अपने आध्यात्मिक प्रवचनों के माध्यम से कर जैनसमाज की सुषुप्त चेतना को जागृत किया; किन्तु उनके प्रवचन साहित्य का विश्वविद्यालयीन स्तरीय मुल्यांकन आज तक नहीं हुआ था।

इस आवश्यकता की पूर्ति **श्रीमती ममता जैन** धर्मपत्नी पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाडा ने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर से डॉ. पृथ्वीराज मालीवाल (पूर्व विभागाध्यक्ष एवं सह-आचार्य) के निर्देशन में **कानजीस्वामी के प्रवचन साहित्य का अनुशीलन** नामक शोधप्रबन्ध प्रस्तुत कर पूर्ण की।

इस शोधप्रबन्ध में आठ अध्यायों के अन्तर्गत कानजीस्वामी के साहित्यिक विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया है। आपकी इस उपलब्धी पर जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

गोष्ठी सम्पन्न

रतलाम (म.प्र.): यहाँ दिनांक २१ अक्टूबर को तोपखाना स्थित श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में **मोक्षशास्त्र की विषयवस्तु** के सम्बन्ध में एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया ।

गोष्ठी की अध्यक्षता निर्वृत्तमान प्राचार्य श्री एन.सी. जैन ने की। गोष्ठी में स्थानीय मुमुक्षु बंधुओं ने अपने विचार व्यक्त किये । साथ ही इस अवसर पर मोक्षशास्त्र के नियमित स्वाध्याय का समारोहपूर्वक शुभारम्भ किया गया। ज्ञातव्य है कि यहाँ पण्डित पद्मकुमारजी अजमेरा के दैनिक प्रवचनों का लाभ स्थानीय श्रोताओं को प्राप्त होता है। **ह्न जम्बुकुमार पाटोदी**

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार

40

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

परिणमनरूप क्रिया तो छहों द्रव्यों में होती है; परन्तु क्षेत्र से क्षेत्रान्तर अर्थात् एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने की क्रिया मात्र जीव और पुद्गल ह्न इन दो द्रव्यों में ही होती है। आकाश द्रव्य अनादिकाल से अपनी जगह अवस्थित है और रहेगा। धर्मद्रव्य और अधर्मद्रव्य के प्रदेश भी अनादिकाल से अनंतकाल तक जहाँ व्याप्त है, वहीं व्याप्त रहेंगे। असंख्यात कालद्रव्य लोकाकाश के एक-एक प्रदेश में रत्नों की राशि के समान खचित हैं।

यहाँ रत्नों की राशि के समान कहकर आचार्यदेव यह कहना चाहते हैं कि पुद्गल के परमाणु तो स्निग्ध एवं रूक्षत्व गुण के कारण आपस में चिपक जाते हैं, बंध को प्राप्त हो जाते हैं और बिखर भी जाते हैं। रूक्ष होंगे तो बिखर जायेंगे और स्निग्ध होंगे तो चिपक जायेंगे; परन्तु कालद्रव्य आपस में चिपकते नहीं हैं। तात्पर्य यह है कि कालद्रव्य में स्कन्धरूप होने की योग्यता नहीं है; अत: उसकी मर्यादा एक प्रदेश मात्र की ही है।

आकाश द्रव्य सम्पूर्ण लोक में व्याप्त है; अत: उसमें क्षेत्रान्तर गमन की कोई सम्भावना नहीं है ह्न ऐसे ही धर्मद्रव्य व अधर्मद्रव्य सम्पूर्ण लोकाकाश में व्याप्त हैं; अत: उनके भी क्षेत्रान्तर गमन की कोई सम्भावना नहीं है।

यदि रेल के डिब्बे में बैठे तो वहाँ हिलने-डुलने की गुजांइश रहती है; परन्तु किसी बर्तन में किसी चीज को ठसाठस भर दिया जाय तो उसमें हिलने की गुजांइश नहीं रहती है ह्न ऐसे ही धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य एवं कालद्रव्य लोकाकाश के प्रत्येक प्रदेश में ठसाठस भरे हुए हैं। आकाश के अनंत प्रदेश हैं और उसके एक भाग असंख्यातप्रदेशी लोकाकाश के एक-एक प्रदेश में रत्नों की राशि के समान एक-एक कालद्रव्य खचित हैं।

जैसे हार में जड़े हुए रत्न एक-दूसरे के पास हैं; पर परस्पर जुड़े नहीं हैं। अपना स्थान छोड़कर दूसरे स्थान में जाते नहीं हैं और दूसरों को अपने स्थान में आने नहीं देते हैं। रत्नों की राशि का उदाहरण देकर आचार्यदेव यह कहना चाहते हैं कि उनमें स्कन्ध होने की शक्ति नहीं है।

प्रत्येक कालाणु अपने आप में परिपूर्ण द्रव्य है, वह किसी का अंश नहीं है। अनादिकाल से जिस आकाश के प्रदेश में जो कालद्रव्य स्थित है, वह अनादि से वहीं है और अनंतकाल तक वहीं रहेगा; वह वहाँ से हिलनेवाला नहीं है। इस दृष्टि से धर्म, अधर्म, आकाश और काल को निष्क्रिय कहा गया है। उनमें परिणमन नहीं होता है ह्न ऐसी बात नहीं है।

ध्यान रहे यहाँ परिणमनरूप क्रिया की बात नहीं है। यहाँ तो क्षेत्र से क्षेत्रान्तररूप गमन का नाम क्रिया है। एक आकाश के प्रदेश से दूसरे आकाश के प्रदेश में जाने का नाम क्रिया है। इसप्रकार आचार्यदेव ने द्रव्यों को सक्रिय एवं निष्क्रिय ह्न इन दो भागों में विभाजित किया है। जीव व पुद्गल दो सक्रिय द्रव्य हैं एवं अन्य चार द्रव्य निष्क्रिय हैं। इसको प्रवचनसार में क्रियावान और भाववान इस रूप में भी कहा है।

भाववान तो छहों द्रव्य हैं। भाववान अर्थात् परिणमनरूप क्रिया से सम्पन्न और क्रियावान अर्थात् क्षेत्र से क्षेत्रान्तररूप क्रिया से सम्पन्न। इसप्रकार आचार्य ने भाववान व क्रियावान ये दो विभाग भी द्रव्यों में किये हैं।

क्षेत्र से क्षेत्रान्तररूप क्रिया की चर्चा प्रेरक निमित्त और उदासीन निमित्त के रूप में भी की जाती है; अत: यहाँ प्रेरक निमित्त को समझना आवश्यक है।

प्रेरक निमित्त कहते ही सभी को यही समझ में आता है कि गुरुजी प्रेरक निमित्त हैं; क्योंकि वे डंडा मारकर पढ़ाते हैं। पुस्तक उदासीन निमित्त है; क्योंकि पढ़ाई में पुस्तक सहायता देती है; किन्तु पढ़ाई के लिए बाध्य नहीं करती; परन्तु शास्त्रों में प्रेरक और उदासीन निमित्तों की ऐसी व्याख्या नहीं है।

शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि क्रियावान द्रव्यों को प्रेरक निमित्त कहते हैं और निष्क्रिय द्रव्यों को उदासीन निमित्त कहते हैं।

यहाँ उदाहरण इसप्रकार दिया जाता है कि हवा ध्वजा के चलने में प्रेरक निमित्त है; क्योंकि हवा चलती है, क्रियावान है। धर्मद्रव्य उदासीन निमित्त है; क्योंकि वह क्रियावान नहीं है; एक जगह से दूसरी जगह नहीं जाता है। धर्मद्रव्य जीव और पुद्गलों को गति करने में निमित्त है; परन्तु स्वयं गति नहीं करता। इसप्रकार स्वयं जिसमें गति नहीं है, उसे उदासीन निमित्त कहा है।

ऐसा नहीं है कि प्रेरक निमित्त अधिक बलवान है। गुरुजी डण्डा मार-मारकर पढ़ाते हैं, हवा खूब चल करके ध्वजा को उड़ाती है।

इसी भाषा ने लोगों के चित्त में भ्रम उत्पन्न किया है कि प्रेरक निमित्त बहुत बलवान है एवं उदासीन निमित्त ऐसे ही पड़ा रहता है। इसीलिए आचार्यदेव को यह लिखना पड़ा कि सभी निमित्त कार्य होने में धर्मास्तिकाय के समान ही उदासीन हैं।

यदि ऐसा है तो प्रश्न यह है कि आचार्यदेव ने प्रेरक और उदासीन निमित्त ह्न ऐसे दो भेद ही क्यों किये ?

जिनकी क्षेत्र से क्षेत्रान्तर गति होती है ह्न ऐसे निमित्त एवं जिनकी क्षेत्र से क्षेत्रान्तर गति नहीं होती है ह्न ऐसे निमित्त ह्न इसप्रकार दो प्रकार के निमित्तों को बताने के लिए उन्होंने दो भेद किये। इच्छावान और क्रियावान निमित्तों को प्रेरक निमित्त कहते हैं। जीव में इच्छा भी है और क्रिया भी है, पुद्गल में मात्र क्रिया है, इच्छा नहीं है। धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य और कालद्रव्य इनमें इच्छा भी नहीं है और क्रिया भी नहीं है; इसलिए ये चार द्रव्य उदासीन निमित्त हैं एवं जीव और पुद्गल द्रव्य प्रेरक निमित्त हैं।

जीव व पुद्गल दोनों ही क्रियावान होने से प्रेरक निमित्त हैं; इसीलिए हवा को प्रेरक निमित्त कहा है। हवा में जीव एवं पुद्गल दोनों मिले हुए हैं। जिस दण्ड पर वह ध्वजा खड़ी थी, उस दण्ड को उदासीन निमित्त कहा। भेद तो मात्र यह बताने के लिए किया था; पर हमने उसमें से निमित्त की बतबत्ता खोजनी शुरू कर दी।

इसप्रकार क्रियावान और भाववान ये दो भेद करने के बाद आचार्यदेव ने मूर्तिक और अमूर्तिक ये दो भेद किये। मूर्तिक कहते ही पुद्गल की मुख्यता हो गई; क्योंकि पुद्गल मूर्तिक है ह्न

स्पर्शरसगन्धवर्णवन्त: पुद्गला:। रूपिण: पुद्गल:।

जिसमें स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण हैं, वे पुद्गल हैं एवं पुद्गल रूपी अर्थात् मूर्तिक है। मूर्त की परिभाषा इसप्रकार है ह्न

मुत्ता इंदियगेज्झा पोग्गलदव्वप्पगा अणेगविधा।
दव्वाणममुत्ताणं गुणा अमुत्ता मुणेदव्वा।।१३१।।

(हरिगीत)

इन्द्रियों से ग्राह्य बहुविधि मूर्त्त गुण पुद्गलमयी।
अमूर्त्त हैं जो द्रव्य उनके गुण अमूर्त्तिक जानना।।१३१।।

पुद्गलद्रव्यात्मक इन्द्रियग्राह्य द्रव्य के गुण मूर्त हैं और अनेकप्रकार के अमूर्त द्रव्यों के गुण अमूर्त जानना चाहिए।

यहाँ जो इन्द्रियों के पकड़ में आता है, उसे मूर्त कहा है।

जो पकड़ता है, जानता है, वह तो आत्मा ही है। इन्द्रियाँ उसे नहीं जानती हैं; वे तो जड़ हैं। क्षयोपशमज्ञानवालों के जानने में इन्द्रियाँ निमित्त होती हैं। इसलिए इन्द्रियों के द्वारा जो जानने में आता है, वह मूर्त है ह्न ऐसा कहा है।

यहाँ प्रश्न यह है कि यह अनिवार्य नहीं है कि हम मूर्त को आँख से ही देख सकते हैं, केवली भगवान तो बिना आँख के ही रूप को देखते हैं।

अरे भाई ! जिन संसारी जीवों को मूर्तिक और अमूर्तिक का भेद बताना है; वे संसारीजीव रूप को आँख के माध्यम से ही जानते हैं; इसलिए आचार्यदेव ने यहाँ इन्द्रियग्राह्य यह विशेषण जोड़ दिया है।

वस्तुत: जिसमें स्पर्श-रस-गंध-वर्ण पाया जाये; उसे मूर्त कहना चाहिए था; क्योंकि यही भावात्मक (पॉजिटिव) लक्षण है; परन्तु आचार्यदेव ने यह लक्षण जीव की तरफ से दिया है। यह लक्षण हमारी सुविधा के लिए है कि इन्द्रियों के माध्यम से जो जानकारी हो रही है, वह सब मूर्त पदार्थों की ही हो रही है। मूर्त पदार्थ मात्र पुद्गल हैं; इसलिए केवल पुद्गल ही हमारे जानने में आ रहा है।

हमारे हृदय में इन्द्रियों के प्रति बहुत उपकृत भाव हो गया है।हम उनके कृतज्ञ हो गये हैं एवं उनकी कृतज्ञता में बहुत दब गये हैं।

यह हमारे मस्तिष्क में बैठ गया है कि इन्द्रियाँ हमारे ज्ञान में सहायक हैं; उपकारक हैं। पुद्गल को जानने में, मूर्त पदार्थ को जानने में इन्होंने बहुत उपकार किया है, यदि आँख नहीं होती तो मुझे रूप दिखाई नहीं देता।

बहुत से लोग तो यह कहते हैं कि आँखे गई तो समझ लो जीवन गया, बस मर गये। इसप्रकार इन्द्रियों को हम हमारे ज्ञान में बहुत बड़ा सहयोगी मानते हैं एवं उससे स्वयं को उपकृत एवं कृतज्ञ मानते हैं।

इन्द्रियों के समर्थन में हम कहते हैं कि ये ज्ञान में निमित्त हैं, शास्त्रों को पढ़ने में नेत्रों ने सहयोग दिया है, कानों ने प्रवचन सुनने में सहारा दिया है ? इसतरह हम उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। इसलिए आचार्यदेव ने यह कहा है कि इन्द्रियज्ञान ज्ञान नहीं है। बालबोध पाठमाला भाग-३ में भी मैंने लिखा है कि 'इन्द्रिय ज्ञान तुच्छ है; क्योंकि वह आत्मा के जानने में उपादान तो है ही नहीं, निमित्त भी नहीं है।'

इन्द्रियाँ पुद्गल के जानने में भी निमित्त ही हैं, उपादान नहीं है।

इन्द्रियों की गुलामी से मुक्त होने के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि वे मात्र पुद्गल के स्कंधों को जानने में निमित्त हैं; अत: हमारे आत्म - कल्याण के कार्य में उनकी कोई उपयोगिता नहीं है।

समयसार ग्रन्थ में स्पष्ट लिखा है कि जो जीव को नहीं जानता है, वह अजीव को भी नहीं जानता है और जो जीव-अजीव को नहीं जानता है, वह सम्यग्दृष्टि कैसे हो सकता है ?

आत्मा को अस्ति से जानना वह जीव को जानना है और आत्मा को ही नास्ति से जानना वह अजीव को जानना है।

जीव को आत्मा का कल्याण करना है तो आत्मा को जानो ह्न इतना ही पर्याप्त है। देह से भिन्न, राग से भिन्न भगवान आत्मा को जानना है तो फिर शरीर और राग को भी जानना ही होगा; क्योंकि राग को जानना आस्रव को जानना है, देह को जानना अजीव को जानना है।

इसप्रकार शरीर और राग से भिन्न आत्मा को जानना ही शरीररूप अजीव और रागरूप आस्रव को जानना है। उनके बारे में इससे अधिक और कुछ नहीं जानना है।

इसे ही मैं दूसरी विधि से समझाता हूँ कि आत्मकल्याण के लिए भाषा को जानना जरूरी है या नहीं ?

देशनालब्धि के बिना सम्यग्दर्शन नहीं होगा। शास्त्र में पाँच लब्धियों में देशनालब्धि को अनिवार्य कहा गया है। वह देशनालब्धि किसी न किसी भाषा में ही होगी। गुरु हमें समझायेंगे तो वे हिन्दी, संस्कृत, गुजराती किसी न किसी भाषा के माध्यम से ही समझायेंगे।

मेरे कथन का आशय यह है कि आत्मकल्याण के लिए मात्र आत्मा का ज्ञान जरूरी नहीं है; उसके साथ भाषा का ज्ञान भी होना चाहिए। मात्र आत्मा को ही जानो और कुछ नहीं ह्न यह मुख्यता की विवक्षा से उचित ही है; परन्तु गौणरूप से गहराई में जायेंगे तो धीरे-धीरे सभी बिन्दु स्पष्ट हो जाते हैं।

हमारी बारात आयेगी तो आप लोगों द्वारा स्वागत बढ़िया होना चाहिए, कम से कम पाँच प्रकार की मिठाइयाँ तो होनी ही चाहिए।

तब यह कहता है कि भाईसाहब आपको जो कुछ चाहिए, वह सब बता दीजिए; बस आपका मार्गदर्शन चाहिए।

तब बाराती कहते हैं कि नहीं, नहीं; बस पाँच प्रकार की मिठाइयाँ ही चाहिए।

इस पर यदि वह मात्र पाँच मिठाईयाँ ही रखे और कुछ नहीं रखे; पानी, सुपारी, इलायची, लोंग कुछ भी नहीं रखे तो समस्या उपस्थित होगी ही।

ऐसे ही आचार्यदेव ने कहा कि बस आत्मा को जानो; तुम्हारा कल्याण हो जायेगा और हमारे सामने तत्त्वार्थसूत्र, प्रवचनसार, समयसार, जैनसिद्धान्त कौमुदी और परीक्षामुख रख दिये। अभी वे यही कह रहे हैं कि आत्मा का कल्याण करने के लिए आत्मा को जानना जरूरी है; भाषा को जानो तो ठीक, नहीं जानो तो ठीक।

तब हम उन्हीं गुरुजी की तरफ मेंढ़े की भांति आश्चर्यान्वित होकर आँखे फाड़कर देखने लगेंगे। ऐसी स्थिति में उन्हीं गुरु को म्लेच्छ भाषा में ही सही, पर हमें किसी भाषा में ही समझाना पड़ता है।

इसलिए आचार्यदेव ने द्रव्यों के वर्गीकरण में उन्हें मूर्त और अमूर्त इन भेदों में भी विभाजित किया है।

जो इन्द्रियों के द्वारा ग्राह्य है, वह मूर्त है। इसका मतलब यह नहीं है कि मूर्त पदार्थ का ज्ञान इन्द्रियों के बिना नहीं होता; क्योंकि मूर्त पदार्थों का ज्ञान अरिहंत और सिद्ध भगवान को इन्द्रियों के बिना ही होता है।

इसप्रकार इस लक्षण में तो अव्याप्ति दोष आता है; क्योंकि परमाणु आदि बहुत से मूर्त पदार्थ इन्द्रियों द्वारा नहीं जाने जाते, वे केवलज्ञान और अनुमान व आगमादि प्रमाणों से जाने जाते हैं। **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

डॉ. भारिल्ल जैन समाज की महान विभूति : गुलाबचन्द कटारिया

उदयपुर (राज.) : यहाँ पटेल सर्किल स्थित सुन्दरसिंह भण्डारी कार्यालय में मंगलवार दिनांक ४ अक्टूबर २००५ को ' **डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व**' पुस्तक का विमोचन राजस्थान सरकार के **गृहमंत्री श्री गुलाबचन्दजी कटारिया** के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर माननीय कटारियाजी ने डॉ. भारिल्ल को जैन समाज की **महान विभूति** बताते हुये भारतीय साहित्य को डॉ. भारिल्ल द्वारा दिये गये सांस्कृतिक एवं साहित्यिक योगदान को अविस्मरणीय बताते हुये उनकी प्रशंसा की।

पुस्तक का विमोचन करते हुये गृहमंत्री श्री गुलाबचन्दजी कटारिया, कृति के लेखक बांये से द्वितीय डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री एवं अन्य।

साथ ही इस कृति के लेखक तथा अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर को उनके विगत ५ वर्ष के अथक प्रयासों हेतु हार्दिक बधाई दी।

समारोह के अध्यक्ष नगर परिषद् सभापती श्री रवीन्द्र श्रीमाली तथा मुख्य अतिथि भाजपा शहर जिलाध्यक्ष श्री ताराचन्दजी जैन थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में निर्माण समिति अध्यक्ष प्रमोद सामर, भाजपागिर्वामण्डल अध्यक्ष ललित मेनारिया, भाजयुमो जिलाध्यक्ष राजकुमार चित्तोडा, उपाध्यक्ष महेश त्रिवेदी, दीपक मुर्डिया एवं पार्षद सुनील कोठारी आदि उपस्थित थे।

उक्त कृति में कुल सात अध्याय है; जिसमें लेखक ने डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के जीवन व साहित्य पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

४२३ पृष्ठीय इस कृति का प्रकाशन पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा किया गया है। जिसका विक्रय मूल्य ३० रुपये है।

कार्यक्रम के संयोजक अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के प्रदेश प्रतिनिधि श्री जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर थे। आभार प्रदर्शन डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री ने किया। **ह्न जिनेन्द्र शास्त्री**

लन्दन पंचकल्याणक हेतु सम्पर्क करें

आप सभी को सूचित करते हुये अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है कि वृषभादि महावीर पर्यन्त चौवीस तीर्थंकरों एवं कुन्दकुन्दादि आचार्यों की पावन प्रेरणा से प्रवाहित वीतरागी तत्त्वज्ञान के रहस्योद्घाटक गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग से देश-विदेश में अध्यात्म वाणी का व्यापक प्रचार हुआ है। इसी शृंखला में सम्पूर्ण देश में सैंकड़ों जिनमन्दिरों का निर्माण हुआ और हो रहा है।

गुरुदेवश्री की सदेह उपस्थिति में भी नैरोबी-अफ्रीका में प्रथम जिनमन्दिर का निर्माण होकर पंचकल्याणक का भव्य आयोजन हुआ था।

अब पुन: विदेश में दूसरे दिगम्बर जैन शुद्ध तेरापंथ एवं आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान के पोषक जिनमंदिर का निर्माण हो चुका है, जिसमें तीर्थनायक भगवान महावीरस्वामी की धवल पाषाण से निर्मित ६१ इंच उन्नत पद्मासन जिनप्रतिमा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पूर्वक विराजमान की जायेगी। प्रतिमा भारत से लंदन पहुँच चुकी है। जिनमंदिर एवं प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा **दिनांक ४ अगस्त से ९ अगस्त, २००६** तक होनेवाले पंचकल्याणक महोत्सव में होगी।

जो भी भाई-बहिन इस पुण्य अवसर का लाभ लेने हेतु लंदन जाना चाहते हैं; वे विस्तृत जानकारी हेतु मंगलायतन-अलीगढ़ में सम्पर्क करें ह्न

श्री पवन जैनह्न०५७१-२४१०३९५, २४१००१०

पण्डित अशोक लुहाड़ियाह्न०९३५८२५२१०५

ई-मेल : enquiry@pavnagroup.com & nairkcd@yahoo.com

महामस्तकाभिषेक की तैयारियाँ जोरों पर

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में दिनांक ६ फरवरी, २००६ से प्रारंभ हो रहे महामस्तकाभिषेक महोत्सव का उद्घाटन २२ जनवरी, २००६ को महामहीम राष्ट्रपति ए.पी. जे. अब्दुल कलाम करेंगे। इस महोत्सव को अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव के रूप में मनाने का शासन ने संकल्प किया। शासन से करीब १५० करोड़ रुपये से भी अधिक का अनुदान प्राप्त होगा।

३१ दिसम्बर, २००५ तक श्रवणबेलगोला तक का रेल्वे लोहमार्ग एवं रेल्वे स्टेशन राष्ट्र को बाहल हो जायेगा। सभी संभागों से, राज्यों की राजधानियों से रेल्वे ट्रेनें यहाँ आ सकेंगी। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री देवगोड़ा २२ जनवरी से १९ फरवरी तक स्वयं उपस्थित रहेंगे।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) दिसम्बर (प्रथम)2005
J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व धर्मदर्शन तथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127